Topic 1 :– गांधी सागर वन्यजीव अभयारण्य

चर्चा में क्यों:– हाल ही में दक्षिण अफ्रीका के एक प्रतिनिधिमंडल ने मध्य प्रदेश के गांधी सागर वन्य जीव अभ्यारण का निरीक्षण किया।

निरीक्षण का उद्देश्य :– मध्य प्रदेश के गांधी सागर वन्य जीव अभ्यारण में आने वाले समय में दक्षिण अफ्रीका से आठ चीतों को लाया जाएगा जिसके लिए गांधी सागर में किस प्रकार की व्यवस्थाएं हैं इसका निरीक्षण करने के लिए दक्षिण अफ्रीका से एक निरीक्षक तीन पहुंची ।

इन आठ चीतों को लाने की योजना प्रोजेक्ट टाइगर के अंतर्गत ही सामिल है इस योजना के तहत गांधी सागर वन्य जीव अभ्यारण में चीतों को पुनः स्थापित करने की योजना है गांधी सागर अभयारण्य को इन चीतों के लिए विकसित करने में लगभग 20 करोड़ रुपए का व्यय आयेगा।

गांधी सागर वन्यजीव अभयारण्य :–

यह अभ्यारण मध्य प्रदेश में स्थित है तथा इसकी सीमा राजस्थान के साथ भी लगती है यह अभ्यारण मध्य प्रदेश में मंदसौर और नीमच जिलों में स्थित है गांधी सागर को वन्य जीव अभ्यारण के रूप में 1974 में अधिसूचित किया गया।

अभयारण्य में अवस्थित ऐतिहासिक और धार्मिक महत्व के स्थल :– भड़काजी रॉक पेंटिंग, चौरासीगढ़, चतुर्भुजनाथ मंदिर,नरसिंहझर हिंगलाजगढ़ किला, करकेश्वर मंदिर।

गांधी सागर अभ्यारण के मध्य भाग से होकर चंबल नदी बहती है जो इसे दो भागों में विभाजित करती है।

गांधी सागर अभ्यारण में पाई जाने वाली प्रमुख वृक्ष की प्रजातियां :- खैर, धावड़ा, सलाई, करधई, तेंदू और पलाश ।

अभयारण्य में पाए जाने वाले जानवर :- चिंकारा, नीलगाय , धारीदार लकड़बग्घा, चित्तीदार हिरण, तेंदुआ और सियार ।

भारत सरकार ने वर्ष 1952 में अधिकारिक तौर पर चीता को विलुप्त घोषित कर दिया।

चीते तथा इनकी उपस्थिति :-

चीतों की वर्तमान में प्राप्त मात्र दो उप प्रजातियां है जिन्हेंमान्यता प्राप्त है :- एशियाई चीता (Acinonyx jubatus venaticus) और अफ्रीकी चीता (Acinonyx jubatus jubatus) ।

- अफ्रीकी चीता का वैज्ञानिक नाम एसिनोनिक्स जुबेटस है ।
- अफ्रीकी चीता की त्वचा हल्की भूरी और सुनहरी जैसी होती है और एशियाई चीतों से तुलनात्मक मोटी होती है।
- अफ्रीकी चीते एशियाई चीतों की तुलना में अधिक बड़े होते है।
- अफ्रीकी चीतों की क्षमता भी एशियाई चीतों से अधिक होती है।
- एशियाई चीतों की प्राप्ति हमें सिर्फ ईरान से होती है।
- चीतों के वाणिज्यिक प्रयोग के लिये इसके अंतर्राष्ट्रीय व्यापार पर प्रतिबंध लगाया गया है।

चीता को 1 जुलाई, 1975 से 'लुप्तप्राय वन्यजीव एवं वनस्पति प्रजाति अंतर्राष्ट्रीय व्यापार अभिसमय' (CITIES) के परिशिष्ट-I के तहत संरक्षित किया गया है ।

चीतों की अंतर्राष्ट्रीय प्रकृति संरक्षण संघ (IUCN) स्थिति:-

एशियाई चीते को गम्भीर संकटापन्न (Critically Endangered) तो बही अफ्रीकी चीता को रेड लिस्ट (लाल सूची) में संवेदनशील (Vulnerable) अधिसूचित किया गया है।

Result Mitra

चीतों के लिए खतरे : –

1.मानव तथा इनके मध्य होने वाले संघर्ष।
2.आवास की क्षति
3.शिकार की अनुपलब्धता
4.अवैध तस्करी।
5.वनों की कटाई और कृषि के चलते वन भूमि एवं चीता आवासों में कमी का होना ।

Topic 2 :– आसियान भविष्य मंच

चर्चा में क्यों :– हाल ही में आयोजित होने वाले 'आसियान फ्यूचर फोरम' में भारत के विदेश मंत्री ने भाग लिया।

आसियान फ्यूचर फोरम :– आसियान फ्यूचर फोरम, आसियान तथा इसके सदस्य देशों के बीच विचारों तथा नीतियों को साझा करने के लिए एक संयुक्त मंच प्रदान करता है

आसियान फ्यूचर फोरम को वर्ष 2023 में 43वें आसियान शिखर सम्मेलन के द्वारान वियतनाम द्वारा प्रस्तावित एक प्रस्ताव के माध्यम से अपनाया गया था।

इसका आयोजन हनोई, वियतनाम में संपन्न हुआ।

आसियान फ्यूचर फोरम का उद्देश्य :–

आसियान के सदस्य देशों के मध्य तथा साथ ही भागीदार देशों के मंच बनाना जिससे विकास पथ को बढ़ावा देने और आकार देने में योगदान प्रदान किया जा सके।

प्रथम आसियान फ्यूचर फोरम की थीम:–
जन-केंद्रित आसियान समुदाय के तीव्र और सतत विकास की ओर ।

आसियान (ASEAN) :–

पूरा नाम :– दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों का संगठन (Association of Southeast Asian Nations) ।

स्थापना 1967 में बैंकॉक घोषणा पर हस्ताक्षर के माध्यम से

यह एक ऐसा संघटन है जिसमे दक्षिण पूर्व एशियाई राष्ट्र सामिल है।

इसका आदर्श वाक्य 'वन विजन, वन आइडेंटिटी, वन कम्युनिटी' ।

आसियान एक क्षेत्रीय संगठन है

स्थापना का मुख्य उद्देश्य :–

1.एशिया-प्रशांत के उपनिवेशी राष्ट्रों के बढ़ते तनाव के बीच राजनीतिक और सामाजिक स्थिरता को बढ़ावा देने के लिये ।

2. अंतर-सरकारी सहयोग को बढ़ावा देता है
3. अपने सदस्यों और एशिया के अन्य देशों के बीच आर्थिक, राजनीतिक, सुरक्षा, सैन्य, शैक्षिक और सामाजिक-सांस्कृतिक एकीकरण की सुविधा प्रदान करता है

Result Mitra

आसियान दिवस प्रतिवर्ष 8 अगस्त को मनाया जाता है।

इंडोनेशिया की राजधानी जकार्ता में आसियान का सचिवालय है।

आसियान के संस्थापक सदस्य :– इसकी स्थापना के समय इसमें पांच सदस्य थे फिलीपींस, इंडोनेशिया, मलेशिया, सिंगापुर और थाईलैंड।

वर्तमान में इसमें 10 सदस्य देश शामिल हैं :–

इंडोनेशिया, सिंगापुर, थाईलैंड, मलेशिया, फिलीपींस, कंबोडिया और वियतनाम, ब्रुनेई, लाओस और म्यांमार ।

Topic 3 :– कलवरी श्रेणी की पनडुब्बी व हैंगर श्रेणी की पनडुब्बी.

चर्चा में क्यों :– हाल ही में पाकिस्तान के द्वारा अपनी पहली हैंगर श्रेणी की पनडुब्बी को लॉन्च किया गया जिसकी तुलना भारत की कलवरी श्रेणी के पनडुब्बियों से की जा रही है

पाकिस्तान के द्वारा लांच की गई हैंगर श्रेणी की पनडुब्बी को भारत की कलवारी श्रेणी की पनडुब्बियों के समकक्ष माना जा रहा है

हैंगर श्रेणी की पनडुब्बी :– एक डीजल इलेक्ट्रिक पनडुब्बी है,
इसका नाम पीएनएस हैंगर के नाम पर रखा गया है जो अब सेवामुक्त कर दी गई है

हैंगर श्रेणी की इस पनडुब्बी के द्वारा ही 1971 के युद्ध में भारत की युद्धपोत खुकरी को डुबो दिया गया था।

भारत के कलवरी श्रेणी की पनडुब्बियों:–

- इन पनडुबियों का निर्माण मझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड द्वारा किया जा रहा है।
- इन पनडुब्बियों का निर्माण प्रोजेक्ट 75 के तहत किया जा रहा है।
- यह पनडुब्बी भी फ्रांसेव के साथ चल रही भारत फ्रांस पनडुब्बी संयुक्त परियोजना का हिस्सा है जिन्हें प्रोजेक्ट 75 के तहत डिजाइन किया जा रहा है

- इन पनडुब्बियों का डिजाइन स्कॉर्पियो क्लास की पनडुब्बी पर आधारित है
- ये मुख्य रूप से हमलावर पनडुब्बियां हैं।
- इन पनडुब्बियों में डीजल-इलेक्ट्रिक प्रणोदन प्रणाली का उपयोग किया गया है।
- भारत वर्तमान में छह कलवरी श्रेणी की पनडुब्बियों का प्रयोग कर रहा है। इनके नाम हैं- कलवरी, खंडेरी, करंज, वेला, वागीर और वागशिर।
- भारत अपनी कलवारी क्लास पनडुब्बियों में एयर इंडिपेंडेंट प्रोपल्शन (AIP) प्रणाली को प्रारंभ करने की प्रक्रिया में है।
- यह प्रणाली पूर्ण रूप से देश में ही स्वदेशी तकनीक से विकसित की गई है
- एयर इंडिपेंडेंस प्रोफेशन की सहायता से गैर परमाणु ऊर्जा से चलने वाली पनडुब्बियों जो मुख्ता डीजल से डीजल से चलती हैं यह भी अधिक समय तक जल के अंदर रह सकती हैं

Result Mitra

Topic 4 :– फाइव आइज़

चर्चा में क्यों:– हाल ही में फाइव आइज़ संगठन ने भारत के ऊपर जासूसी करने के आरोप लगाए हैं

क्या है फाइव आइस क्या है फाइव आइज़ :–

यह एक खुफिया गठबंधन है जो आपस में खुफिया जानकारी को शेयरिंग (आदान–प्रदान) करने का कार्य करता है ये **गठबंधन UK-USA के मध्य हुए समझौते के पक्षकार हैं। सदस्य :–** ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, न्यूज़ीलैंड, यूनाइटेड किंगडम और संयुक्त राज्य अमेरिका ।

इस संगठन के द्वारा भारत के ऊपर जासूसी के आरोप लगाए गए हैं किंतु भारत ने इन सभी आरोपी को खारिज कर दिया है

फ़ाइव आइज़ इंटेलिजेंस-शेयरिंग नेटवर्क के बारे में:-

इस संगठन की उत्पत्ति द्वितीय विश्व युद्ध के बाद 1946 में हुए यूनाइटेड किंगडम और अमेरिका के मध्य एक समझौते के तहत कीजिए इस संगठन का मुख्य उद्देश्य सदस्य देशों के मध्य एकत्रित की गई इंटेलिजेंस की जानकारी को साझा करना है।

आने वाले समय में भी इस संगठन में सदस्य देशों की संख्या बढ़ती गई कनाडा 1948 में शामिल हुआ, जबकि ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड 1956 में।

इसी प्रकार से नाइन आइज़' नौ देशों का समूह है जिसमें फाइव आईज के सदस्य साथ ही नीदरलैंड, डेनमार्क, फ्राँस और नॉर्वे सामिल है

जबकि 14 आइज़ गठबंधन में नाइन आइज़' के साथ ही बेल्जियम, स्पेन, इटली, जर्मनी तथा स्वीडन शामिल हैं।

Result Mitra